

વિક્રમ સંવત-૨૦૩૬, અષાઢ વદ-૧૩, શુક્રવાર, તા. ૮-૮-૧૯૮૦
વચનામૃત-૧, ૧૦-૧૨, પ્રવચન નં. ૧

હે જીવ! તુજે કહીં ન સ્યતા હો તો અપના ઉપયોગ પલટ દે ઓર આત્મામેં સચિ લગા. આત્મામેં સ્યે ઓસા હૈ. આત્મામેં આનંદ ભરા હૈ; વહાં અવશ્ય સ્યેગા. જગતમં કહીં સ્યે ઓસા નહીં હૈ પરંતુ એક આત્મામેં અવશ્ય સ્યે ઓસા હૈ. ઈસલિયે તૂ આત્મામેં સચિ લગા. ૧.

..ઘણાંને એવો વિચાર થયો કે આ વાંચવું. બ્ર. બહેનો છે. બેન રાત્રે બોલ્યા હશે તો દિકરીઓએ લખી લીધેલું. એ આ બહાર આવ્યું. જરી પ્રેમથી સાંભળવા જેવું છે. બેનના વચન છે એટલે અનુભવમાંથી નિકળેલા છે. આનંદનો અનુભવ-અનુભૂતિ. શરત, એક શરત.

‘હે જીવ!’ છે ને પહેલો? ‘હે જીવ!’ પહેલો જ બોલ. ‘તુજે કહીં ન સ્યતા હો તો...’ યહ શર્ત. ‘તુજે કહીં ન સ્યતા હો તો...’ યહ શર્ત. યદિ કહીં ભી પરપદાર્થમેં સ્યે અથવા પુણ્ય ઓર પાપકે ભાવ, વહ સ્યેગા તો આત્મા નહીં સ્યેગા. આહા..! જિસને... ઈસલિયે પહલા શબ્દ પડા હૈ। ‘તુજે કહીં ન સ્યતા હો તો...’ યહ શર્ત. આહા..હા...! ઈજ્જત, કીર્તિ, પૈસા, લક્ષ્મી, ઈજ્જત ઓર પુણ્ય એવં પાપ દોનોં ભાવ, વહ ભી તુજે નહીં સ્યતે હો તો. આહા..હા..! હમારી કાઠિયાવાડી ભાષા-

तने गमतु न लोय तो. यह शब्द है. 'न स्यता लो तो अपना उपयोग पलट दे...' आला..ला..! अंतर स्वभावसे विपरीत सब चीज, तीर्थकर परमात्मा भी, परके उपर लक्ष्य जानेसे राग ही होता है. भगवानके उपर लक्ष्य जाता है तो राग ही होता है. कहीं न स्यता लो तो रुचि पलट दे. आला..ला..! अपना उपयोग...

जिस उपयोगमें आत्मा पकड़में नहीं आता है तो समझना कि वह उपयोग स्थूल है. आला..ला..! अंदर जिस उपयोगमें आत्मा पकड़में नहीं आता, वह मोटा उपयोग है-वह स्थूल उपयोग है. सूक्ष्म बात है, यह तो मूलकी अन्दरकी बातें हैं. इसलिये तुझे अन्दर आत्मामें जाना लो तो उपयोगको पलट, उपयोगको पलट दे. जैसे जो उपयोग परमें है, एक ओर भगवान आत्मा और एक ओर लोकालोक. पांच परमेश्वरकी ओर भी रुचि और राग है तो अपनी ओर उपयोग नहीं पलटेगा. आला..ला..! ऐसी बात है.

भगवान आत्मा सख्यिदानंद स्वरूप, सत् ज्ञान और आनंद स्वरूप. वहीं तेरे उपयोगको पलट दे और आत्मामें रुचि लगा. यह करना है. छ ढालामें आता है. 'लाभ बातकी बात...' आता है न? 'निश्चय उर आणो, छोडी जगत द्रंघ इंघ, निज आतम ध्यावो.' यह छ ढालामें आता है. यह एक टूकडा बस है. लाक बातकी बात, कोड बातकी बात निश्चय उर आणो. छोडी जगत द्रंघ इंघ, द्वैतपना भी छोड दे. आला..ला..! अंदर आत्मा में हूं और यह राग है, ऐसा द्वैत भी छोड दे. द्वैतपना छोड दे और आत्माकी रुचि करके अंदर जा. अंदर आत्मामें प्रवेश कर. सूक्ष्म बात है, भाई! मुद्देकी रकमकी बात है. बाकी अनंत बैर चारह अंग भी अनंत बैर धारण किया. एक अंगर १८ एज्जर पद. और एक-एक पदमें ५१ कोड श्लोक. ५१ कोड श्लोक. आला..ला..! ऐसा चारह अंग भी धारण किया. परंतु रुचि जो अंतर्मुभ चालिये वह नहीं थी. बाहरमें कहीं न कहीं उसका अटकना होता है. यदि अटकना नहीं लो तो अन्दर गये बिना रहे नहीं. आला..ला..! यह भोज निकालना चालिये कि मेरा कहां रुकना होता है? मैं कहां रुचि करता हूं?

यह कहते हैं. 'आत्मामें रुचि लगा.' आला..ला..! सब छोड दे. पुण्य, दया, दान, व्यवहार रत्नत्रयके विकल्पको भी छोड दे. क्योंकि उसमें आत्मा नहीं है, वह तो अनात्मा है. आत्मामें उपयोग लगा दे. वह तो राग बिनाका उपयोग हुआ. आला..ला..! करना यह है. बाकी लाभ बात कोई भी लो. 'आत्मामें रुचि लगा. आत्मामें रुचे ऐसा है.' पहला शब्द ऐसा कहा कि आत्मामें रुचि लगा. क्यों? कि 'आत्मामें रुचे ऐसा है.' आत्मामें रुचे ऐसा है. आत्मामें रुचे ऐसा है. अतीन्द्रिय

आनंद अंदर पडा है. असंभ्य प्रदेशमें सर्वांग आनंद (भरा है). आला..ला..! 'आत्मामें रूचे औसा है.' यह शर्त. जैसे आत्मामें रुचि लगा दे. समझमें आया? भाषा सादी है. भाव गंभीर है.

पहले कदा न? 'तुझे कहीं न रुचता हो तो...' कहीं न रुचे तो. आला..ला..! आत्माके सिवा कहीं भी न रुचता हो तो अपनेमें रुचि लगा दे. और अपनेमें रुचि लगा दे (क्योंकि) आत्मामें रुचि लग सकती है. आत्मामें रुचे औसा है आत्मा. पुण्य और पाप रुचे औसी चीज नहीं है. आला..ला..! औसी बात है, प्रभु! आला..! यहां तो प्रभु कलकर ही सबको बुलाते हैं. भगवान है. आत्मा भगवान अंदर पूर्णानंदका नाथ.

'आत्मामें आनंद भरा है,...' दो बात की. आत्मामें रुचि लगा. क्यों? कि 'आत्मामें रुचे औसा है.' आत्मामें रुचे औसा है, उसका कारण. आत्मामें रुचि लगा दे उसका कारण कि 'आत्मामें आनंद भरा है...' आला..ला..! अतीन्द्रिय आनंदका पिंड प्रभु है. आला..ला..! कर्मके संगसे भी भिन्न है और पुण्य-पापका विकल्प-भाव, उससे भी भगवान अतीन्द्रि आनंदकंद प्रभु (भिन्न है). भाषामें तो दूसरा क्या आवे? भाव औसी कोई चीज है कि अनंत कालमें कभी हुआ नहीं. अनंत बार... 'मुनिव्रत धार अनंत बैर त्रैवेयक उपजयो,' द्विगंबर मुनि. दूसरेको मुनि नहीं कहते. द्रव्यविंग भी नहीं है. वस्त्रवाला तो द्रव्यविंगी भी नहीं है. आला..ला..! यह तो वस्त्ररहित द्विगंबर अनंत बैर नौवी त्रैवेयक गया. नौवी त्रैवेयक गया उसका परिणाम कैसा होगा? शुक्लवेश्या. शुक्लवेश्याके बिना त्रैवेयकमें जाये नहीं. आला..ला..! शुक्लवेश्या. चमडी निकालकर नमक डाले तो भी क्रोध न करे. बाह्य क्षमा उतनी है. परंतु अंतर आत्मा आनंदकंद है, उसकी ओर रुचि नहीं है. बाहरकी सब सामग्रीमें रुचि. अंतर आनंदका नाथ प्रभु, उस ओर रुचि लगा दे. क्योंकि रुचि लगे (औसा है). क्यों लगे? कि यहां आनंद है. आला..ला..!

रातको थोडा बोले थे. यहां भाव ब्रह्मचारी दृष्ट बलने हैं. उनके नीचे दृष्ट बलने भाव ब्रह्मचारी हैं. कितनी तो ग्रेन्ज्युअेट है, वाभोपतिकी है. उसमें नौ बलनोंने विभ विधा था. उनके भाई हिंमतभाईके हाथ लगा. फिर यहां आया. ओलो..लो...! ठन शब्दोंमें गंभीरता है. अकेले शब्द नहीं है, शब्दके पीछे गूढता है.

तुझे कहीं न रुचता हो तो अंतरमें रुचि करे. क्यों? कि यहां रुचि करने लायक है. क्यों? कि उसमें आनंद है. आला..! आला..ला..! 'आत्मामें आनंद भरा है;...' पुण्य और पापका भाव है वह ऊपर है. जिस भावसे तीर्थकर गोत्र बंधे, वह

भाव राग है, ऊँह है. आला..ला...! भगवंत आत्मा अमृतस्वरूप है. वल बंधका अक भी अंश-कारण नहीं. जो बंधका कारण हो वल राग तो ऊँह है. आला..ला..! ईसलिये कहते हैं, 'आत्मामें आनंद भरा है...' पुण्य और पापके भावमें दुःख है.

'वलं अवश्य रयेगा.' प्रभु! आत्मामें आनंद भरा है. तुजे वलं अवश्य रयेगा. आला..ला..! है? 'वलं अवश्य रयेगा.' सब परसे रुचि छोड. वलं अंदरमें अवश्य रयेगा. भगवान अंदर आनंदमूर्ति प्रभु. अक ज्ञान पर तू ईस बातको ले कि करना तो यह है, बाकी सब पुण्य है, पुण्य. आला..ला..! जगतमें कहीं रये अैसा नहीं है. जगतमें कुछ भी रये अैसा है नहीं. पुण्य और पाप भी रये अैसे नहीं है. 'परंतु अक आत्मामें अवश्य रये अैसा है.' दुनियाकी कोई चीजमें रये अैसा नहीं है. क्योंकि बाहरमें लक्ष्य जाये, तीन लोकके नाथ तीर्थंकर और परमेश्वर, पंच परमेशी पर लक्ष्य जाये तो राग हुआ बिना रहता नहीं. परद्रव्य पर (लक्ष्य) जाये तो राग आता ही है. स्वआश्रयमें जाये तो रागरहित होता है. दो बात. यह सिद्धांत.

स्वआश्रय भगवान परमात्मस्वरूप आत्मा, भगवत्स्वरूपका आश्रय लेनेमें आनंद है. उसके सिवा दूसरा किसीका भी आश्रय लेने जायेगा, पंच परमेशीका आश्रय लेने जायेगा तो भी राग और दुःख उत्पन्न होगा. आला..ला..! कठिन बात है, भाई! यहां तो जन्म-मरण रहित होनेकी बात है. जिसका जन्म-मरण न मिटे, उसने कुछ किया नहीं. यहां तो अक ही बात है. जिसके भवका नाश नहीं हुआ, उसने कुछ नहीं किया. आला..ला..! भवका नाश कब होता है? जिसमें भव और भवका भाव, जिसमें अभाव है. आत्मा जो है उसमें भव और भवका भाव, दोनोंका अभाव है. आला..ला..! उस आत्मा पर दृष्टि और रुचि करेगा तो तू जरूर भवरहित होगा. और भवमें यह रहेंगा तो नर्क और निगोद.. आला..ला..!

आचार्यने तो वलं तक कहा, कपडेका टूकडा रभकर मुनि है, अैसा माने तो निगोदमें जायेगा. अरे..रे..! आला..ला..! क्योंकि नवों तत्त्वकी भूल हुई. क्योंकि टूकडा रभा, संयोग आया. छे गुरुस्थानमें मुनिको तीन कषायका अभाव हुआ हो वलं कपडा होता ही नहीं. कपडा आया तो उतना राग आया. मुनिपना रहा नहीं. और रागको संवर माना तो मिथ्यात्व हुआ. वह है आस्रव, आस्रवको संवर माना. वह संवर है नहीं. तो संवरकी भूल, आस्रवकी भूल, अजुवकी भूल. उतना संयोग है, वह रागके बिना होता नहीं. अजुवकी भूल. और जुवकी भूल. जुवका आश्रय उतना हो छे गुरुस्थान तक तो उसको वस्त्रका विकल्प होता नहीं. सबकी भूल

हुँ, नवों तत्वकी। यह कोई संप्रदाय नहीं है। यह तो तीन लोकके नाथ सर्वज्ञदेव परमेश्वर सीमंघरस्वामी भगवान महाविदेहमें विराजते हैं, वहां गये थे, वहांसे आया है। बहन भी वहांसे आयी है। थोड़ी सूक्ष्म बात है। समझमें आया? आहा..हा..!

‘अेक आत्मामें अवश्य रुये ऐसा है। इसलिये तू आत्मामें रुचि लगा.’ आहा..हा..! सब बात छोडकर, ज्ञानपना-बानपना बलुत करना वह छोड दे, इसकी रुचि लगा दे। आहा..हा..! प्रवचनसारमें शुड्आतमें आता है। अमृतचंद्राचार्य कलते हैं, बस-अवम. मुजे विशेष ज्ञानकी जरूरत नहीं है। प्रवचनसारमें उर गाथा. अब ज्ञानकी जरूरत (नहीं है). रुचि-दृष्टि और स्थिरता. बस दो. ज्ञान भवे अल्प हो, परंतु दृष्टि पूरे भगवान पर और स्थिरता. बस, अवम. मुजे कुछ ज्ञानपनेकी जरूरत नहीं है. ऐसा लिजा है. टीका है, प्रवचनसारमें टीका है. मालूम है, सब देजा है न. (संवत) १९७८की सालसे शास्त्र देजते हैं. ७८. कितने साल हुअे? ५८. ५८ वर्ष हुअे. सब शास्त्र (देजे हैं). आहा..हा..! ‘इसलिये तू आत्मामें रुचि लगा.’ अब दूसरा (बोल). भाईने लिजा है. किसने लिजा है? किसीने दिया है. इसके बाद १०वां बोल पढना. किसीने दिया है. अभी किसीने पत्रा दिया था न? उसमें लिजा है. पहला बोल, फिर १०वां. १०वां बोल.

हम सबको सिद्धस्वरूप ही देजते हैं, हम तो सबको चैतन्य ही देज रहे हैं. हम किसीको राग-द्वेषवाले देजते ही नहीं. वे अपनेको भले ही चाहे जैसा मानते हों, परंतु जिसे चैतन्य-आत्मा प्रकाशित हुआ उसे सब चैतन्यमय ही भासित होता है. १०.

‘हम सबको सिद्धस्वरूप ही देजते हैं.’ १०. आहा..हा..! जिसकी पर्यायबुद्धि गई, जिसकी पर्यायबुद्धि, रागकी रुचि गई उसको पूरा आत्मा दृष्टिमें आया. चैतन्यका नूरका पुर, आनंदका पुर प्रभु, वह जिसे रुचिमें सम्यज्दर्शनमें आया उसको सब आत्मा जैसे हैं, ऐसा दिजता है. उसकी पर्यायमें भूल है, उसे अेक ओर रभो. परंतु आनंद.. आनंद.. आनंद.. सब भगवान है. जिसकी पर्यायमेंसे, रागमेंसे रुचि लटकर अंदर आत्मा पूर्णानंदका नाथ, उसकी जहां भेट हुँ, तो आत्मा तो वह है. राग या अेक समयकी पर्याय भी आत्मा नहीं. अेक समयकी पर्याय व्यवहार आत्मा है. आहा..हा..! समझमें आया?

दोपहरको पढते है वह कौन-सा शास्त्र है? नियमसार. नियमसारमें तो ऐसा

कहा है कि एक भी रागके अंशमें दूसरेका आश्रय लेना वह राग है. आत्माको उससे बिलकूल लाभ नहीं है. परके आश्रयमें आत्माको बिलकूल लाभ नहीं है. श्रवणसे भी ज्ञान नहीं होता है, ऐसा वहां कहा है. प्रभु! जिसमें ज्ञान है उसमेंसे ज्ञान आता है कि वाणीमेंसे? वाणी तो जड है. उसमेंसे ज्ञान आता है? आला..ला..! कलना था दूसरा, आ गया दूसरा.

‘सिद्धस्वरूप ही देवते हैं, हम तो सबको चैतन्य ही देव रहे हैं.’ क्योंकि अपना आत्मा चैतन्य है, ऐसा अपनेको मान लुआ तो उस दृष्टिसे सब आत्मा चैतन्य भगवान हैं. आला..ला..! बंध अधिकार है, उसमें आभिरमें और सर्वविशुद्धज्ञान (अधिकारके) आभिरमें, और परमात्मप्रकाशमें आभिरमें एक ऐसी बड़ी बात ली है कि सर्व जव मन-वचन-कायसे रहित, रागसे रहित, तीन शक्यसे रहित आनंदकंद प्रभु है. ऐसी सब जवकी भावना भा. ऐसा संस्कृत पाठ है.

मुमुक्षु :- द्रव्य संग्रहमें ली कहा है.

उत्तर :- हां. वह तो है. यह तो बड़ा पाठ है. यहां नहीं है. है? बड़ा पाठ है. बहुत बड़ा पाठ है. पहले कहा था न?

एक बार हम संसारमें थे. दुकान (पर बैठते थे). तो माव लेने हम वडोहरा गये थे. वडोहराके पास पावेज है न? वहां हमारी दुकान थी. अभी लडका आया था न. दुकान है न. बड़ी दुकान है. १८ सालकी उम्र थी, अभी ८१ लुओ. ८१. १८ सालकी उम्रमें माव लेने गये थे. माव लेनेके बाद रात्रिमें निवृत्ति मिली. अनुसूयाका एक नाटक था. अनुसूया, लडके पास जो नर्मदा है, और अनुसूया दोनों बलने थी. एक बलन कुंवारी थी. कुंवारी समझे? शादी नहीं की थी. और स्वर्गमें जाती थी. उन लोगोंमें ऐसा है न, अपुत्रस्य नास्ति. अपुत्रस्य गति नास्ति. पुत्र नहीं हो उसे गति नहीं मिलती. उन लोगोंमें है. इसलिये उस बाँधने कहा, मैं क्या करूं? नीचे जा और किसीसे ली शादी कर ले. आला..ला..! शादी की. बालक हुआ.

मुझे तो दूसरा कलना है. हमारेमें भाषा है. इसमें तो सिई अमृतचंद्रायार्थकी (टीका) है. जयसेनाचार्यकी नहीं है. है? क्या कहते हैं आचार्य मलाराज? देओ! मैंने यह शब्द वहां नाटकमें देया था. लडका हुआ. फिर सुवाते हैं न? सुवाते हैं. (संवत्) १८६४की साल. ६४. वह बाँध कलती है, बेटा! तू निर्विकल्प है. बेटा! तू उदासीन है. तेरा आसन राग नहीं, आसन अंदर आनंद है. उदासीन.. उदासीन.. उदासीन.. नाथ! तू है. आला..ला..! नाटकमें उन दिनोंमें ऐसा बोलते थे. बारह आनेकी टिकट और आप लोग जो बोलते हो उसकी पुस्तिका दो. दूसरे बारह आने

वो. लेकिन आप क्या बोलते हो, हमें मालूम होना चाहिए. दृष्ट की बात है. चार बोल तो पाठ रह गये. निर्विकल्पो अहं. बेटा! तू निर्विकल्प है. शुद्धोसि, बुद्धोसि, उदासीनोसि. अपनेमें भी है. जयसेनाचार्यकी टीकामें बंध अधिकारकी टीकामें आभिरमें संस्कृतमें है और सर्वविशुद्धमें टीकामें है और परमात्मप्रकाश पूर्ण हुआ बादमें टीकामें है. तीन जगल है. बहुत बोल हैं.

मैं सहज शुद्ध ज्ञान और आनंद एक स्वभाव हूं. उसमें पाठ है, संस्कृतमें. यह तो गुजराती है. मैं सहज शुद्ध ज्ञान और आनंद जिसका एक स्वभाव है ऐसा मैं हूं. आला..ला..! तीनमें विभा है, संस्कृत टीकामें है. थोड़े शब्द नहीं है, पूरा विभा है. मैं निर्विकल्प हूं. उदासीन हूं. यह शब्द वहां आया था. निज निरंजन शुद्ध आत्माका. निज निरंजन शुद्ध आत्माका सम्यक् श्रद्धा, ज्ञान, अनुष्ठानरूप निश्चय रत्नत्रय धारक निश्चय रत्नत्रयात्मक निर्विकल्प समाधि, उससे उत्पन्न वीतराग सहजानंदरूप सुभकी अनुभूति मात्र जिसका लक्षण है. सुभकी अनुभूतिमात्र जिसका लक्षण है. आनंदका अनुभव ही जिसका लक्षण है. आला..ला..! जयसेनाचार्यकी टीका है. जयसेनाचार्यकी संस्कृत टीका है. दो-चार शब्द नहीं, पूरी वांछ है.

निर्विकल्प, उससे उत्पन्न वीतराग श्रद्धा, सुभकी अनुभूतिमात्र जिसका लक्षण. जैसे स्वसंवेदनज्ञान द्वारा. जैसे स्वसंवेदनज्ञान द्वारा. आला..! स्वसंवेदन-अपनेसे वेदनमें आने योग्य. ऐसा ज्ञानने योग्य, प्राप्त नाम होने योग्य. ऐसा भरित अवस्थ. क्या कहते हैं? भरित अवस्थ. पूर्ण गुणसे मैं भरा हूं. अवस्थ-निश्चय स्थ जैसे लेना. अवस्थ यानी अवस्था नहीं लेना. भरित अवस्थ. अनंत गुणसे भरा पडा मैं हूं. आला..ला..! है, पाठ है, हां! इसमें पाठ है. यह तो गुजराती पढा. तीन जगल पाठ है. आला..ला..!

मैं भरित अवस्थ. भरित अवस्थावाला परिपूर्ण. आला..ला..! मेरी शीव दशा भरी पडी है. आला..ला..! मेरा स्वभाव ही शीवस्वरूप है. ऐसी भावना समकित्ती अपनेमें अपने लिये भाते हैं और सब श्रवके लिये भाते हैं. ऐसी बात है. मैं, राग-द्वेष-मोह, क्रोध, मान, माया, लोभ, पांच इन्द्रियोंका विषय व्यापार, मन-वचन-कायाका व्यापार, उससे रहित हूं. आला..ला..! रहित हूं, वह तो अपने लिये कहा. लेकिन सब आत्मा जैसे हो, ऐसी भावना है. ऐसी बात है यहां. पाठमें ऐसा आयेगा.

इन्द्रियोंका व्यापार, मन-वचन-कायाका व्यापार, भावकर्म, द्रव्यकर्म, नोकर्म रहित. प्र्याति, पूजा, लाभ एवं दृष्ट, श्रुत, अनुभूत भोगोंकी आकांक्षा. निदान, माया,

मिथ्यात्व आदि तीन शक्य रहित. सर्व विभाव परिणाम रहित शून्य हूं. मैं तो शून्य हूं. तीनों लोकमें... अब अंतिम सार आया. इन तीनों लोकमें, तीनों कालमें शुद्ध निश्चयनयसे मैं ऐसा हूं तथापि सभी जव जैसे हैं. यह संस्कृत है. यह संस्कृतमें है. इतने बोल कहे ऐसा मैं हूं, परंतु सर्व जव जैसे हैं. मुझे कोई जव अल्प नहीं दिखते. आह्लाहा..! पर्यायबुद्धि जहां गઈ तो द्रव्यबुद्धि दुई. तो सब आत्माको द्रव्य समान देखते हैं. साधमी हैं. द्रव्यसे साधमी है, पर्यायकी भूल, उसकी वह जाने. आह्लाहा..!

तीनों काल, तीन लोकमें शुद्ध निश्चयनयसे सब जव जैसे हैं. सब जव जैसे हैं. आचार्य महाराज जयसेनाचार्य कहते हैं कि, तुम तो जैसे हो, लेकिन सर्व जव जैसे हैं. सब भगवान उदासीन मन-वचन-कायासे भिन्न है. सहजानंदकी मूर्ति है. मन-वचन-कायासे सब जव भिन्न है. मन-वचन-कायाकी और कृत-कारित-अनुमोदनासे निरंतर भावना कर्तव्य. ऐसी भावना करी. मैं शुद्ध हूं लेकिन सर्व भगवान शुद्ध है. ऐसी भावना करनी. बड़ा लेख है. इसका गुजराती बनाया है. बड़ा लेख है संस्कृत टीकामें.

यहां कहते हैं, 'हम...' इसका बोल. 'सबको सिद्धस्वरूप ही देखते हैं.' इस अपेक्षासे. आचार्य महाराजका तीन जगह आधार है. बंध अधिकार पूरा करनेके बाद भी संस्कृतमें अधिकार है. सर्वविशुद्धज्ञान अधिकारके आभिरमें संस्कृतमें है और परमात्म प्रकाशमें आभिरमें संस्कृतमें है. इतने शब्द हैं, दो-चार शब्द नहीं. मुझे तो नाटकमेंसे चार ही याद रहे. चार बोल है. बेटा! तू निर्विकल्पोसी, उदासीनोसी, सुद्धोसि, बुद्धोसि. आह्लाहा..! ज्ञानका पिंड है, तू तो शुद्ध है. ऐसा नाटकमें कहते थे. ६४की साल. कितने साल हुआ? नाटकमें जैसे बोलते थे, वह अभी संप्रदायमें बोलते नहीं. अकांत है, निश्चय है (कहते हैं). अरे..! भगवान! सुन न प्रभु! तेरेमें शक्ति पूर्णानंद भरी है.

वह यहां कहते हैं, देओ! 'हम सबको सिद्धस्वरूप ही देखते हैं,...' आह्लाहा..! सब अंदर सिद्धस्वरूपी प्रभु (है). एक समयकी पर्यायमें, एक समयकी पर्यायमें संसार है. वस्तुमें संसार नहीं है. वस्तुमें उदयभाव या कोई भाव नहीं है. आह्लाहा..! 'हम सबको सिद्धस्वरूप ही...' 'ही' शब्द पडा है. सिद्धस्वरूप ही. निश्चय. देखते हैं. 'हम तो सबको चैतन्य ही देख रहे हैं.' आह्लाहा..! सबको चैतनस्वरूप भगवान (देखते हैं). यह शरीर, मिट्टी नहीं, कर्म भी नहीं. कर्मवाला आत्मा है ऐसा हम मानते नहीं. कर्म भिन्न है, आत्मा भिन्न है. कर्म आत्माको छूते नहीं, आत्मा कर्मको

कभी तीन कालमें छूता नहीं। लोग सिद्धाते हैं, कर्मसे हुआ, कर्मसे हुआ, कर्मसे हुआ। सब बूढ़ बात है। कर्म आत्माको छूते नहीं, क्योंकि परद्रव्य है। अक द्रव्य दूसरे द्रव्यको कभी छूता नहीं। अरे..! ऐसी बात है, प्रभु! उसमेंसे है। संस्कृत टीका है। आला..!

‘हम तो सबको चैतन्य ही देख रहे हैं।’ ‘ही’ शब्द पडा है, देजो! पहलेमें भी ‘ही’ है। ‘हम सबको सिद्धस्वरूप ही देखते हैं,...’ अंकांत निश्चय। सबको, हम तो सबको निश्चय ही देख रहे हैं। ‘हम किन्हींको राग-द्वेषवाले देखते ही नहीं।’ आलाला..! द्रव्य स्वभावमें कोई राग-द्वेष है ही नहीं। द्रव्य स्वभाव परिपूर्ण भगवान है। आलाला..! उस द्रव्य स्वभावमें तो सिद्धपर्याय भी नहीं है। सिद्धपर्याय तो अक समयकी पर्याय है। आलाला..! और आत्मा तो ऐसी अनंती पर्यायका पिंड है। ऐसी बात है, प्रभु! कठिन बात लगे।

दूसरे जव, ‘वे अपनेको भले ही चाहे जैसा मानते हों, परंतु जिसे चैतन्य-आत्मा प्रकाशित हुआ...’ आलाला..! जिसको अंदरमें चैतन्य प्रकाशित हुआ। चैतन्य रागसे भिन्न लोकर प्रकाशित हुआ, विकल्पसे भिन्न लोकर निर्विकल्प हुआ। समयसारमें तो वहां तक कला, १४२ गाथा, मैं ज्ञायक हूं, वह विकल्प है उसे छोड दे। पुण्य-पापकी बात को दूर रह गइ। ऐसा पाठ है। मैं ज्ञायक हूं, मैं शुद्ध हूं, ऐसा विकल्प है वह राग है। राग छोड दे। ज्ञायकमें विकल्प-क्विकल्प है नहीं। आलाला..! ऐसी बात है, प्रभु! आत्माकी बडी बात है। बडेकी बडी बात है। आलाला..!

‘आत्मा प्रकाशित हुआ उसे सब चैतन्यमय ही भासित होता है।’ आलाला..! बहुत सूक्ष्म बात है। जिसने चैतन्य स्वरूप देजा। अनुभवमें आया, वह सबको चैतन्यस्वरूप देखता है। वह भगवान है, वह परमात्मा है, परमेश्वर है। पर्यायमें भूल है उसको वह जाने। उसका नुकसान उसको है। आलाला..! दसवां बोल हुआ। ११वां। वह प्रवचनसारका है। अपवाद और उत्सर्गका।

मुमुक्षुओं तथा ज्ञानियोंको अपवादमार्गका या उत्सर्गमार्गका आग्रह नहीं होता, परंतु जिससे अपने परिणाममें आगे बढ़ा जा सके उस मार्गको ग्रहण करते हैं। किन्तु यदि अंकांत उत्सर्ग या अंकांत अपवादकी हठ करे तो उसे वस्तुके यथार्थ स्वरूपकी जबर नहीं है। ११.

‘मुमुक्षुओं तथा ज्ञानियोंको अपवाहमार्गका या उत्सर्गमार्गका आग्रह नहीं होता,...’ क्या कहते हैं? प्रवचनसारमें है. मैं ध्यानमें ही रहूं, ऐसा बहुत आग्रह करेगा और विकल्प तो ज्ञानीको भी उठते हैं. इसलिये लड़ करने जायेगा तो विकल्पसे भ्रष्ट हो जायेगा. ध्यानमें है वह उत्सर्गमार्ग है. ध्यानमें रह सके नहीं, विकल्प आया वह अपवाहमार्ग है. इसलिये उत्सर्ग और अपवाहकी मैत्री रहनी. मैत्री यानी है ऐसा ज्ञानना. है जरूर राग. आला..ला..! यह प्रवचनसारमें है. उसकी यहां बात है. उत्सर्ग और अपवाह... देओ! ‘ज्ञानियोंको अपवाहमार्गका...’ अपवाह यानी राग. रागादि आता है. अंदर ध्यानमें स्थिर न हो सके, अंदर स्थिर न रहे तो राग दया, दान, भक्ति, व्रत, पूजाका भाव आता है. लेकिन वह भाव अवपाहमार्ग है, उत्सर्गमार्ग नहीं. उत्सर्गमार्ग तो उससे (विकल्पसे) छूटकर अंदरमें रहता है वह उत्सर्गमार्ग है. यह प्रवचनसारमें है. आलाला..!

मुमुक्षु :- ग्रहण-त्याग है ही नहीं.

उत्तर :- आला..!

‘मुमुक्षुओंको तथा ज्ञानियोंको अपवाहमार्गका या उत्सर्गमार्गका आग्रह नहीं होता,...’ मैं ध्यानमें ही रहूं, ऐसा आग्रह भी नहीं करना. सम्यग्दर्शन हुआ, ज्ञान हुआ तो मैं ध्यानमें ही रहूं, ऐसा आग्रह नहीं करना. क्योंकि विकल्प आयेगा. तो दृष्टि यहां रहेगी. दृष्टि द्रव्य पर रहेगी, विकल्प आयेगा अपवाह. अपवाहका भी आग्रह नहीं करना कि मुझे विकल्पमें ही रहना है. ऐसा आग्रह नहीं होना चाहिये. उसे छोड़कर अंदरमें जाना. आलाला..!

प्रवचनसार. उत्सर्ग और अपवाह दोनों साथमें है. साधक है न, साधक है. अंतरमें पूर्णताका स्वरूप दृष्टि, अनुभवमें आया तो उसीमें ध्यानमें रहना, वह तो उत्सर्गमार्ग. उत्सर्ग यानी मूल मार्ग है. लेकिन उसमें रह सकता नहीं. दृष्टि यहां रहे, दृष्टि यहां द्रव्य उपर हमेशा है. दृष्टि द्रव्य परसे लटती नहीं. फिर भी अस्थिरताका विकल्प आता है वह अपवाह है. उसमें आग्रह नहीं करना कि वह नहीं आये. विकल्प नहीं आये. ऐसा आग्रह नहीं करना. आलाला..! समझमें आया? सूक्ष्म बात है, भाई! कहानी नहीं है. यह तो आत्माकी कथा है. आलाला..!

भवभ्रमण नहीं हो ऐसा वस्तु. भव करे, अक करे, दूसरा करे, ऐसा अनंत भव करेगा. भव ही नहीं हो. यहां ... अपने उत्सर्ग मार्गमें तो ध्यानमें ही रहना. लेकिन उसका भी आग्रह नहीं. छद्मस्थ है तो राग आयेगा. तो उसको अपवाहमें आना चाहिये. अपवाहका भी आग्रह नहीं कि राग आया वह ठीक है. वह आग्रह

नहीं. वहांसे निकलकर ध्यानमें जाना. आला..ला..! उत्सर्ग और अपवाह. आया न? आग्रह नहीं होना (चाहिये).

‘परंतु जिससे अपने परिणाममें आगे बढ़ा जा सके...’ जिस परिणामसे आगे बढ़ा जा सके वह परिणाम करना. ‘उस मार्गको ग्रहण करते हैं.’ द्रव्यके आश्रयसे, द्रव्य नाम चैतन्य भगवान, उसके आश्रयसे ही मोक्षमार्ग होगा. स्वद्रव्यके आश्रयसे ही मोक्षमार्ग है. रागादि परद्रव्यके आश्रयसे मोक्षमार्ग है नहीं. आला..ला..! भगवान आत्मा चैतन्य स्वइपके आश्रयसे ही सच्चा मोक्षमार्ग होगा. परंतु उसका अंकुश आग्रह नहीं करना कि मुझे भान हुआ तो मैं उसमें ही रहूंगा. अस्थिरता आयेगी तब विकल्प-अपवाह आयेगा. जाने. ठीक है जैसे नहीं. विकल्प आये वह ठीक है ऐसा नहीं. आवे उसको जाने. तथापि आग्रह नहीं करे कि विकल्प आने ही नहीं देना. ऐसा आग्रह भी नहीं. आला..ला..! ‘उस मार्गको ग्रहण करते हैं.’

‘किन्तु यदि अंकांत उत्सर्ग या अंकांत अपवाहकी लठ करे...’ देखा! ऐसा पाठ है प्रवचनसारमें. अंदर अकेले ध्यानमें ही रहूं और बाहर नहीं आऊँ, ऐसी लठ करे तो जैसे नहीं रह सकेगा. छत्रस्थ है, अल्पज्ञ है, पुरुषार्थकी कमजोरी है. तो अंदरमें ध्यानमें उत्सर्गमें नहीं रह सकता. अपवाह-विकल्प लक्ष्मि आदिका आता है. और विकल्पका भी आग्रह नहीं कि यह है तो ठीक है. ऐसा नहीं. मैं अंदर स्थिर नहीं हो सकता हूं, इसलिये यह विकल्प आया है. लेकिन विकल्प आया है तो लठ नहीं करना. लठ नहीं करनेका अर्थ-विकल्पसे लाभ है ऐसा मानना नहीं. आला..ला..! मार्ग ऐसा है. ओहोहो..!

‘अंकांत उत्सर्ग या अंकांत अपवाहकी लठ करे तो उसे वस्तुके यथार्थ स्वइपकी ही भण्डर नहीं है.’ आला..ला..! क्योंकि छत्रस्थको अंकुश ध्यान सदा नहीं रहता. अंकुश ध्यान सदा तो केवलीको रहता है. अंकुश ध्यान... वह भी प्रश्न प्रवचनसारमें उठा है कि प्रभु! केवलीको ध्यान कहां है? उनको तो केवलज्ञान हो गया. ऐसा प्रश्न है. संस्कृत टीका. प्रभु केवलज्ञानीको आप ध्यान कहते हो. तो वे तो पूर्ण हो गये हैं. तो जवाब दिया है, वे आनंदका ध्यान करते हैं. अतीन्द्रिय अनुभव करते हैं वह आनंदका ध्यान है. ऐसा पाठ प्रवचनसारमें है. अतीन्द्रिय आनंदका वेदन करते हैं वह उसका ध्यान है. नीचेकी दशामें तो राग आये बिना रहता नहीं. आला..ला..! लेकिन राग धर्म है, राग आया तो ठीक हुआ, ऐसा ज्ञानी मानता नहीं. रागको कावे नागके जैसे देखते हैं. इसमें आगे है. राग ऊपर है. आये बिना रहता नहीं. जबतक केवलज्ञानी न हो अथवा जबतक श्रेणी न चढ़े, तबतक

राग आये बिना रहता नहीं। सम्यग्दृष्टि ज्ञानी मुनिको भी। आला..! मुनिको भी पंच मलाप्रतका विकल्प है वह राग है। पंच मलाप्रत राग है। आलाला..! लेकिन आग्रह नहीं है कि इस रागसे कल्याण होगा। ऐसा नहीं। आलाला..! अपने द्रव्यका आश्रय जितना आश्रय लिया उतनी शुद्धि उत्पन्न हुई। पूर्ण आश्रय लिया तो पूर्ण शुद्धि हो गई, केवलज्ञान (हो गया)। केवलज्ञानीको फिर स्वका नया आश्रय लेना ऐसा है नहीं। पूर्ण हो गया। केवलज्ञानी हुआ तो पूर्ण हो गया।

ऐसे यहां कहते हैं कि 'वस्तुके यथार्थ स्वरूपकी ही जबर नहीं है।' लठ करने जाये अपवादमें विकल्प आये कि मुझे इसमें रहना है, यह ठीक है, उसे वस्तुकी जबर नहीं। और अंदर लठ करने जाये कि मुझे अंदर ही रहना है, तो छत्रस्थमें शक्ति तो है नहीं, विकल्प तो आयेगा। उसे ऐसे वस्तुकी जबर नहीं। सूक्ष्म बात है, प्रभु! मार्ग थोड़ा सूक्ष्म है। आलाला..! वीतरागमार्ग...! आलाला..! तीन लोकके नाथ सर्वज्ञ भगवानका विरह पडा। भरतक्षेत्रमें परमात्मा रहे नहीं। परमात्मा रहे नहीं, परंतु परमात्मा होनेकी शक्ति रही नहीं। क्या कला? अरिहंत तो है नहीं। लेकिन अरिहंत बननेकी शक्ति रही नहीं। आलाला..! ऐसे पंचम कालमें भी आत्माका भान हो सकता है, वह बात कहते हैं। और ऐसे पंचम कालमें... श्लोकमें आयेगा। समयसारमें संस्कृतमें एक श्लोक छे। ... उसमें टीका है। टीकामें (ऐसे लिया है), यहां कदाचित् मोक्ष नहीं जाये, अभी काल ऐसा है, तीन कालमें (-भवमें) जायेगा, ऐसा पाठ है। आलाला..! क्या कला वह?

मुमुक्षु :- परम अध्यात्म तरंगिणी।

उत्तर :- हां, उसमें। निकालो। ऐसा पाठ लिया है कि जिसने आत्माका साधन किया, वह तीन भवमें मोक्ष जायेगा। ऐसा लिखा है। अमृतचंद्राचार्यका श्लोक है। यहां तो अनेक बार (स्वाध्याय) हो गया है। ७८के वर्षसे प्रारंभ किया है। हमारी तो दुकान थी। पालेजमें अभी भी दुकान है न। यहां भी मैं तो शास्त्र ही पढता था। लेकिन श्वेतांबरके, श्वेतांबरके। दशवैकालिक, उत्तराध्ययन.. दुकान पर धंधे पर बैठता था। लेकिन भागीदार दुकान पर बैठते थे तो हम अंदर शास्त्र पढते थे। १८ वर्षकी उम्र। अभी तो ८१ हुआ। यहां लिखा है, देजो!

'...' उसका शब्द संस्कृत पाठमें ऐसा है। जिसे यह मोक्षपंथ है पंचम कालमें भी, वह अचिरात-अल्प कालमें मोक्ष जायेगा। पाठ है। '...' अचिरातका टीकाकारने अर्थ किया है। अचिरातका अर्थ-शीघ्रम्। '...' अथवा तीसरे भवमें। आलाला..! संस्कृत है। साक्षात् परमात्मा भवति एति। वह तीसरे भवमें मोक्ष जायेगा। पंचम आरामें

भोक्ष नहीं है इसलिये पुरुषार्थ नहीं करना ऐसा नहीं. तीसरे भवमें भोक्ष जायेगा, विष्णु है, संस्कृत टीका है. आलाला..!

यहां कला, ११ बोल हो गये. १२.

जिसे द्रव्यदृष्टि प्रगट हुई उसकी दृष्टि अब चैतन्यके तल पर ही लगी है. उसमें परिणति अकेक हो गई है. चैतन्य-तलमें ही सहज दृष्टि है. स्वानुभूतिके कालमें या बाहर उपयोग हो तब भी तल परसे दृष्टि नहीं हटती, दृष्टि बाहर जाती ही नहीं. ज्ञानी चैतन्यके पातालमें पहुंच गये हैं; गहरी-गहरी गुंझमें, बहुत गहराई तक पहुंच गये हैं; साधनाकी सहज दशा साधी हुई है. १२.

‘जिसे द्रव्यदृष्टि प्रगट हुई,...’ क्या कहते हैं? आत्मा जो द्रव्य है त्रिकावी, अके समयकी पर्यायके पीछे पातालमें, अके समयकी पर्यायके पातालमें-तलमें. तल यानी ध्रुव. पर्याय है वह ध्रुव पर तिरती है. आलाला..! वह पहले श्लोकमें आ गया है. समयसार. समयसारमें पहला (श्लोक). पर्याय ध्रुव पर तिरती है. उपर रहती है. पर्याय ध्रुवमें प्रवेश नहीं करती. उपर रहती है. आलाला..! वह पर्याय.. कहते हैं, जिसको (पर्यायदृष्टि) छूट गई और धर्म दृष्टि हुई. त्रिकाव द्रव्य ज्ञायकभावकी दृष्टि हुई. ‘जिसे द्रव्यदृष्टि प्रगट हुई उसकी दृष्टि अब चैतन्यके तल पर ही लगी है.’ यानी क्या कहते हैं? ‘तल पर ही लगी है.’ पर्यायका लक्ष्य ध्रुव पर रहता है. ध्रुव तल है. पर्याय उपर-उपर रहती है और ध्रुव है वह उसका तल है. पर्यायके नीचे तल-ध्रुव रहा है. आलाला..!

जैसे पाताल होता है कि नहीं? वैसे यहां पर्याय उपर है, पर्याय अंदर कभी प्रवेश नहीं करती. आलाला..! पर्याय उपर रहती है. चाहे केवलज्ञान हो तो भी वह ध्रुव पर रहती है, ध्रुवमें प्रवेश नहीं करती. यह कहते हैं. ‘जिसे द्रव्यदृष्टि प्रगट हुई उसकी दृष्टि अब चैतन्यके तल पर ही लगी है.’ चैतन्यका तल यानी ध्रुव. आलाला..! समझितीकी दृष्टि तल पर है. पाताल पर है. पर्यायके पीछे ध्रुव पडा है, ध्रुव पर दृष्टि है. दृष्टि है पर्याय, दृष्टि है पर्याय लेकिन उसका विषय है ध्रुव. आलाला..! समझमें आया? उसका पाताल है. तल. पर्याय उपर है, ध्रुव उसका तल है, तल. जैसे पातालमें जाते हैं न. अंदरमें जाते हैं. आलाला..!

‘चैतन्यके तल पर ही लगी है. उसमें परिणति अकेक हो गई है.’ समझिती

અપને આત્માકો રાગસે ભિન્ન જાનકર અપને જ્ઞાનમેં પરિણતિમેં લગા હૈ. જ્ઞાનમેં એકમેક હો ગયા હૈ. રાગ આતા હૈ લેકિન ભિન્ન રહતા હૈ. રાગ ઓર જ્ઞાન એક નહીં હો જાતે. એસી પરિણતિ હોતી હૈ. ઉપયોગ બાહર જાયે તો ભી (સ્વરૂપસે) દષ્ટિ નહીં હટતી. સમકિતીકા ઉપયોગ બાહર જાયે તો ભી અંદરકી દષ્ટિ ધ્રુવ પરસે નહીં હટતી. ધ્રુવ પરસે દષ્ટિ નહીં હટતી. આહાહા..!

મુમુક્ષુ :- દષ્ટિ એકમેક હો ગયી માને દ્રવ્યમેં..

ઉત્તર :- પરિણતિ-પર્યાય ઉપર હૈ. દ્રવ્યકે ઉપર. ઉત્પાદ-વ્યય ઉપર હૈ, ધ્રુવ અંદર હૈ.

મુમુક્ષુ :- એકમેક હોતી હુઈ ભી એકમેક નહીં હુઈ..

ઉત્તર :- એકમેક નહીં હૈ. લેકિન પર્યાયમેં એકમેક હૈ ન. વહ તો પરસે જુદા કરના હો તો એકમેક હૈ. અંદર જુદા નહીં. વિશેષ આયેગા...

(શ્રોતા :- પ્રમાણ વચન ગુરુદેવ!)